

53105



६०। सोलैषा ५६ सदर बाजा ॥ जावन वते कं गुरा ॥ तीन सै साठ ज्याकै चारालागा ॥ कोटवरा पाच ३
 फेरा ॥ १। रामराय मनकी आसा पाउ ॥ तोका दान गारव साउं टंक ॥ पांच पचास क संव सन
 पना ॥ प्रेउपा दुषान होइ ॥ चेतन पुर सकरु कोटवाली ॥ तोन गारन मुसंको ॥ २। ॥ रां०। गठ प्र
 राजा राज करत हे ॥ निमदन फरत दुयाइ ॥ काम को धदोनु गारदन मार ॥ तोरा सी जद लच
 लाइ ॥ ३। रां० ॥ गपान स मार स स्यासर पुरा ॥ कबु पर चाक बुषाया ॥ दास कबार चमे गठ ३
 पर ॥ जुग जात नि सागा वजाया ॥ धरां मराय मनकी आसा पाउ ॥ इति पद

१	सुर्क न माहा सतका दन विचार पुर्वद सा	३	सुमो सुगाये	१	प्रच की गोवे
१	दिस चालो	४	शरा चित्यो फल होवे	२	गगन में ३००
२	न्यात को सरदार मेरे	५	नरत कुगाने विचार	३	वरा वस ३५०
३	जातराने चलावै कहै	६	उदे गड पेजे	४	चरा लासने मे
४	संतोष वार्ता सुगाय	१	लाय घात उपजे	५	वाय कुगाने विचार
५	गगन कुगाने विचार	२	शे गड पेजे	६	राज मन मान सुगा
६	चोर से उपजे	३	सुख प्र सुख	७	पुतर लासक हेइ
		४	कब मही मानो	८	गरवासी ने ल विमु
				९	सुगी म सुगाय १

॥६॥ माथों फरक इतो प्रध्वान उलास हो ॥ नितान फरक इतो ध्यान कनोलास हो ॥ ना किने
 मारव विचात इ फरक इतो मित्र नोलास हो ॥ होठ फरक इतो प्रीति संग मग्न न सो जन वास
 हो ॥ गाल फरक इतो स्त्री नोलास हो ॥ कान फरक इतो रुमु सास ला ॥ उपरा हाठ फर
 क इतो विजय हो ॥ पुठ फरक इतो पराजय हो ॥ धवा फरक इतो सोग लास हो ॥ नास फर
 क इतो गात्रार सा हो ॥ प्रथमे गुन्य स्नान क फरक इतो स्त्रालास हो ॥ सुषवांम ॥ ॥ ॥
 मरा फरक इतो बटानी हांति हो ॥ बटिनी प्राप्ति हो ॥ जाघ फरक इतो बंधन प्राप्ति ॥ वग
 फरक इतो ध्यान लास हो ॥ पुरषन इति मरा प्रगवास् ॥ स्नान इडा वोनं गिवास् ॥ ॥
 तिग्रंग फरक इतो विचार सपुरा ॥ तिथि नदिवस मिश्रवाण रुद्रं त्रिवैकं मुनि शशि यहुं चंद्रं मवकि
 युग्मा र्थ जन्म नवैय मश शिवै कि सधरा मेक वाधो विजंग नगवत्वं स्त्री जाणर्म कं प्रशस्त ॥ १॥ दिग्भूलतिथि वा
 रदोष मशुर्न जडा कयोग तथा रिक्ता धृष्ट मपी हृष्ट मशुर्न दोषो राहु स्वथा आवा काल कर्च दतार कनया काल
 स्वथा योगिनी सर्व गोविन हंत योग मपर योगा धिराजः स्वता ॥ २॥ तिथि वार नक्षत्र व। एकी कृति। त्रिधान्य सेत
 ॥ द्वित्रिवैकुण्ठ कृत्वा। सप्तष्ट रस ना जितं ॥ १॥ चैत्र मास थी की जे दोहा तिथि जे तीने की जे गाढा। प्रातां स
 रसा नागदरी जे। राजा सेती वार गिणी जे ॥ १॥ तिथि वार नक्षत्र एक बाकी जे ॥ परा ॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥
 १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
 ४१॥ तेयाला ४३॥ सेतला ४०॥ वमुहां सेने हि मंगल ॥ २॥ तिसर्वांग

३

३

जेस जे पेर दास गुठा ॥ फुरेतां जम डुर होवे ॥ दुसरी फुरेतां सुख होवे ॥ ती जी फुरेतां गुण रणी दाहे ॥ चोपी फुरेतां सुसयाली
 देखे ॥ अंजवा फुरेतां ॥ बकुंत म्हाली है ॥ जेस जे पेर दीया ॥ सने नु गुलीया फुरेतां ॥ कुठ बुराई देखे ॥ परस तन ला होये ॥
 ॥ २ ॥ जेख वै पेर दास गुठा फुरेतां दोलत पावे ॥ दुसरी फुरेतां जस पावे ॥ जे तीसरी फुरेतां सुसयाली देखे ॥ जे चोपी
 फुरेतां ॥ दोलत मान पावे ॥ जेवा ची फुरेतां लडाइ होये ॥ जेस ने नु गुलीया फुरेतां दुष ते बुटे ॥ ये रा दे न द फल ॥
 जेस जे पेर दान ॥ फुरेतां किसेना ललडाइ होये ॥ जेख वै पेर दान ॥ फुरेतां न लाई पावे ॥ ३ ॥ जे पहिले पहेर मंज
 फुरेतां तत काल फल पावे ॥ २ ॥ दुजे पहेर मंज फुरेतां ॥ ती जे दिन फल पावे ॥ ३ ॥ ती जे पहेर मंज फुरेतां दीन ॥
 लण फल पावे ॥ ४ ॥ ॥ चोखे पहेर मंज फुरेतां ॥ महिने तथा इक मास पावे फल पावे ॥ इसी तरह विचारना ॥ पु
 रस दासं जा मंज ॥ जे पेर इसी दास मंज सुन है ॥ ५ ॥ लिखतं सेवा राम जी ॥ समत १५ ६ ॥ फल न बदी ब
 ७६ रबी वार ॥

॥ अथ अंगुष्ठ रक्त का फल लिखते ॥ नृजी वीतराजाय नमः ॥ बकुल जतन नाल ॥ अंगुले जमाने दीया ॥ कि
 तावां विचो नृज मुदा करके ॥ नृरो रक्तं मकरके ॥ ये हवनाया है जो को ई अंगुष्ठ फुरेतां फल ॥ नृस दामानु मकरे
 * न * जे सिर विचो फुरेतां ॥ हजार हीषत रे ब्रह्मा ई ॥ ते फिकर डुर होवे ॥ दोलत ते मुरात वा ॥ नृसनु हासल होवे ॥ ते धन प्रा
 पु होवे ॥ १ ॥ जे सिर दीया ॥ १० ॥ सजिर दा फुरेतां बमिया ई ॥ देह जुर बमिया ई पावे ॥ २ ॥ जे देहे नी बलो सिर फुरेतां ॥
 पै मा देवे ॥ ते मुराद नुप फुचै ॥ ३ ॥ जे वाई बल ते सिर फुरेतां ॥ डुष डुर होवे तो मुरात वा पावे ॥ ४ ॥ जे सिर दे पिबे दहेना
 बल पुरेतां ॥ धान अना बुटे ॥ ते मुसाफरा करे ॥ जिथे जाये तिं धे धन पावे ॥ ५ ॥ जे सिर दे पिबे वाई बलं फुरेतां
 बमाई देवे ॥ अंत व मे नृस के मुह तज होवे ॥ ६ ॥ **मंथे का फल लिखते ॥** जे मंथा विंच ते फुरेतां नृह ॥ कुल दी तर है पर
 देस जावे ॥ ते बहुत षट के लिया वे ॥ अरु नी जग हारावे ॥ १ ॥ जे षं वा सं जी तर फो फुरेतां बमाई पावे ॥ २ ॥ जे मंथा
 षवी तर फो फुरेतां ॥ मतलब पुरा करे ॥ ३ ॥ **नफन फल लिखते ॥** जे सजी बलो फुरेतां ॥ पुत्र होवे जे षवी फुरेतां ॥ दो
 लत पावे यारो जी मिले ॥ ४ ॥ जे देहा दे विचो फुरेतां ॥ प्रीत म मिले ॥ या प्रीत म दा षु सया ली देवे ॥ जे दो नो नवां इकठ्ठी या फु
 रेतां थोडा सा दालणी रहेवे ॥ ५ ॥ **नैत्र फल लिखते ॥** जे संजी अंश फुरेतां ॥ कष्टे देवे इजत ते सुष पावे ॥ ६ ॥ जे षवी अंश फुरे
 तां ॥ दालणी रहेवे ॥ ७ ॥ जे संजी अंश फुरे विच ते ता बुरा होवे ॥ ते गुसावाये ॥ ८ ॥ जे षवी अंश विच ते फुरेतां ॥ डुष ते बुटे
 ते सुसाली सेवे ॥ ९ ॥ जे दो नो अंश फुरे ॥ विच तेतां विमारी होवे ॥ १० ॥ जे सजी अंश दास जाको ना फुरेतां ॥ सुसाली देखे ते
 ऐसे हथ लगान ॥ नृरो मित्र नृस ते मिहरवान होवे ॥ ११ ॥ जे षवी अंश दास जाको ना फुरेतां ॥ गई बसत लजे ॥ १२ ॥ जे सजी
 अंश दास जाको ना फुरेतां ॥ अस्मृते सुसाली देखे ॥ १३ ॥ जे षवी अंश दास जाको ना फुरेतां ॥ बुराई पावे ॥ ते बषतावर पुत्र हो
 वे ॥ १४ ॥ जे षवी अंश देन परजा ॥ पलक फुरेतां ॥ इस मन नृते ता लडाई होवे ॥ ते दालणी रहेवे ॥ १५ ॥ जे सजी अंश दात
 ले दी पलक फुरेता ॥ बंद पावे ते मुसकल होवे ॥ १६ ॥ जे षवी अंश दी तले दी ॥ पलक फुरेतां सुसाली देखे ॥ नृरो रव डे हो

देनु पड़वे ॥१॥ **पियनी फल लिखते** ॥ जेस जी म्रंष दी न पर ली पियनी ॥ फुरे तां सादी देखे ॥१॥ जेखी म्रंष दी न पर ली ॥
 पियनी ॥ फुरे तां गम देखे ॥१॥ जेस जी म्रंष दी त ले दी पी पनी ॥ फुरे तां वंजत धेद होवे ॥ सुत म्रदि ते म्रजा व पावे ॥२॥
 जेखी म्रंष दी त ले दी पी पनी ॥ फुरे तां वंजत डस मन ॥ न सनु जाली देन ॥ म्रते वंजत बुरा कहिन ॥२॥ जेस जी म्रंष
 दे म्रस पास ॥ फुरे तां सादी देखे सुसी होवे ॥२॥ जेस जी म्रंष दी जे दी दा फुरे ॥ तां दुष ते च जा होवे ॥२॥ जेखी म्रंष दी दा
 फुरे ॥ तां सव बोले ॥२॥ **कंन फल लिखते** ॥ जेस जा कंन फुरे ॥ तां मिले प्रपू होवे ॥ ते ज गीर प्रपू होवे ॥ ते ज गीर त पावे तेन
 ली वात होवे ॥२॥ म्रते जेखी कंन फुरे ॥ तां कोई पियारा बिछ डे ॥ म्रते या किसे नाल लडाई होवे ॥ म्रते बनी दिलगी रा होवे
 संजे कंन जे कदी संजे कनरी कनुनी फुरे ॥ तां पाद साह के हजुर बगियाई ॥ पावे ई जत पावे ॥२॥ म्रते जे कदी खंवे कन दी कनुनी
 फुरे ॥ तां कुछ पंने नुकसान होवे ॥ म्रते वसुल कुछ ना होवे ॥२॥ जे कदी संजे कंन दी कनुनी फुरे ॥ तां कोई बिछ डिया होये ॥ पि
 यारा मिले म्रते सुसयाली ॥ प्रपू होवे ॥२॥ म्रते जेखी कंन दी कनुनी ॥ फुरे तां दिल गीर होवे ॥ ते पिछे ते सुसी होये ॥ नेरे फ
 ते पावे ॥२॥ **नंक फल लिखते** ॥ जे नंक फुरे तां ॥ दोलत पावे ते गम जाये ॥ म्रौर मेहनत ते बुटे ते ॥ पर देस जाय के वंजत ॥ नफा
 पावे ॥२॥ जे नंक सजी बल ते फुरे ॥ तां सुसी होये जे नंक खवा ॥ बल ते फुरे तां दुष दे ॥२॥ जेस जी ना सदा सुरा फुरे ॥ तां लडाई करे
 दिल गीर होवे ॥२॥ जेखी ना सदा सुरा फुरे ॥ तां दुष होये म्रते के रंज होये ॥३॥ **मुह फल लिखते** ॥ जेसारा मुह फुरे तां सादी देखे ॥
 ते दोलत पावे ॥ यमन जी बसत थाये ॥ या मुह दा को ना सजी बल ते ॥ फुरे तां सुसयाली ते ॥ बखसिस होये ॥४॥ जे मुह दा खवा नरदा
 को ना ॥ फुरे तां माल हथ लजे ॥ ते मुरात बा पावे ॥५॥ **हेठ फल लिखते** ॥ जे न पर ला होठ फुरे तां ॥ डस मन रंद हो बन ॥ म्रौर
 रम सुक न सनु बोसा देवे ॥६॥ जे हेठ ला होठ फुरे तां ॥ मकसद नु पड़वे ॥१॥ जे दोनो हेठ फुरे तां ॥ दो सत न सनु न लीलां
 तय द करन ॥ **जिन फल लिखते** ॥ जे जीन फुरे तां ॥ डस मन नाल लडाई होवे ॥ **गल फल लिखते** ॥ जेस जी गल फुरे तां ॥ कोई कं
 म सवरे ॥ कहां ते कुछ म्रवे सुसी होये ॥६॥ जेखी गल फुरे तां कोई ॥ डर ते वस्त म्रवे ॥ या कोई जरू र कं मक रै सर मिंदा होवे

जे दोनो जंलं इकठाया ॥ फुरन तं वे निआ ज होये ॥ १५ ॥ **तालुया फल** ॥ जे तालु बिं बे फुरे तं ॥ न्यामतें मुरात वा पावे ॥
 ॥ १० ॥ जे सजी बल ते तालुया फुरे तं ॥ बिमार होये ॥ ११ ॥ जे तालुया खबी बल ते फुरे ॥ तं गम पेदा होये ॥ १२ ॥ **दन फल** ॥ जे दं
 दन पर ले ॥ सजी बल ते फुरन ता ॥ बेटा खुब होये ॥ जे दं खबी सजी बल ते फुरन ॥ तं हार म देये सै हाथ लगन ॥ १३ ॥ **ठोमी फल** ॥
 जे ठोमी फुरे तं ॥ हासन बाला मानुष मिले ॥ याल डाई होवे तं फते पावे ॥ १४ ॥ **जार दन फल** ॥ जे जार दन बिच ते फुरे तं ॥
 सै हाथ लगन ॥ बमाई पावे ॥ १५ ॥ जे जार दन खबी बल ॥ ते फुरे तं दुख पावे ॥ ते मेहनत करे ॥ १६ ॥ **मोटे फल** ॥ जे खंवा मोठा फुरे
 तं संतुना ल मेला होये ॥ जे सजा मोठा फुरे ॥ तं न्यामत ओर बमाई पावे ॥ जे खबी बल दा मोठा फुरे ॥ तं मकसद हासल
 होये ॥ ते दिल दीचा हपुरी होये ॥ १७ ॥ **बाजु फल** ॥ जे सजा बाजु फुरे तं ॥ छोडा गम देवे ता फेर खुसयाली देवे ॥ ते धन
 हाथ लगे ते मित्र माले ॥ जे खवा बाजु फुरे तं ॥ कुब खोवे ते फेर पावे ॥ ओर खुसयाली देवे ॥ जे दोनो बाजु फुरन तं ॥ कि
 सेना ललडाई होवे ॥ या घर बिच जो रुना ललडाई होवे ॥ १८ ॥ **पोहवे दा फल** ॥ जे सजा पोहवा फुरे तं ॥ न सदा बुरा खा
 हन बाले सजा पावन ॥ जे खवा पोहवा फुरे तं ॥ पात साह दान ज दा की होये ॥ १९ ॥ **हये जी दा फल** ॥ जे सजी हथेली फुरे तं ॥
 दोलत ते इजत पावे ॥ जे खबी हथेली फुरे तं ॥ न्याने मनो रख नु पावे ॥ **नगली या दा फल** ॥ सजे हथकी नगली दा फल ॥ जे
 मंगुठा फुरे तं ॥ मकसद हासल साता बी हो जावे ॥ जे डूसरी नगली फुरे तं ॥ डूस मन गाली देन ॥ जे तीसरी नगली फुरे तं ॥ खु
 सयाली देवे ॥ जे चोथी नगली फुरे तं ॥ मित्र लाज तेवे ॥ केवुरा होये ॥ जे पंचमी नगली फुरे तं ॥ खुसयाली होये ॥ ग्रहे मान न स
 दे घर आवे ॥ २० ॥ जे सजे हाथ दी नगली या दा ॥ पितर फुरे तं बमा दुख पावे ॥ जे सजे हाथ देन फुरे तं ॥ किसेना ललडाई होये ॥ २१ ॥
खवे हाथ दा नगली या दा फल ॥ निषते ॥ मंगुठा फुरे तं दुख पावे ॥ डुजा फुरे तं लडाई होवे ते हारे ॥ जे ताजी फुरे तं दिल जार होये ॥
 जे चोथी नगली फुरे तं ॥ सोना रुपा हाथ लगे ॥ जे पंचमी नगली फुरे तं ॥ नया मत पावे ॥ **रिदा फल** ॥ जे रिदा फुरे तं ॥ मरा बा
 रत फल पावे ॥ सब कार्य सिध होये ॥ **मंम फल** ॥ जे सजा मंम फुरे तं ॥ दोलत पावे ॥ जे खवा मंम फुरे तं ॥ नजर ना लगे ॥

२

॥**पिठफल**॥ जे पिठ फुरेतां ॥ अजिनाषा पुरी होये ॥ जे सजीव ज पिठ फुरेतां ॥ नसदारिजक कम होये ॥ जे बबी बज पिठ फुरेतां ॥ संतत होये ॥ जे पिठ बिषो फुरेतां ॥ दोलत मदत करे ॥ १ ॥ **बजलफल** ॥ जे बजल सजी फुरेतां ॥ माल दानुक सान होये ॥ जे बबी बजल फुरेतां ॥ बीमार होये ते दरदना लयु करे ॥ २ ॥ **बबीफल** ॥ जे सजी बबी फुरेतां ॥ दिल जार होये ॥ जे बबी बबी फुरेतां ॥ बलाई जामते ववे ॥ ३ ॥ **कमरफल** ॥ जे कमर फुरेतां ॥ मेहनत ते बुटे बजाना दं बीया होया मिले ॥ **चुतडफल** ॥ जे सजा चुतड फुरेतां ॥ माल पावे ते सुसा होये ॥ जे बवा चुतड फुरेतां ॥ किसे जागा दीह कुमत मिले ॥ ४ ॥ **सिनाफल** ॥ सिना फुरेतां ॥ कोई पियारा परदेस ते म्याये मिले ॥ जे सिना सजीव ज ते फुरेतां ॥ दुख देखे ते बंदी पावे ॥ जे सिना बबी बज ते फुरेतां ॥ कोई बुरा कर्म कारावे ॥ ५ ॥ **नुजीफल** ॥ जे सजी चुची फुरेतां ॥ फिकर करावे ॥ जे बबी चुची फुरेतां ॥ माल न्यामत पावे ॥ ६ ॥ **पेटफल** ॥ जे पेट फुरेतां ॥ सुसया ली पावे ॥ ७ ॥ **इंडीफल** ॥ जे लिज फुरेतां ॥ न्ययने मतलब नुप्र कुंवावे ॥ ८ ॥ **गुदाफल** ॥ जे गुदा फुरेतां ॥ माल ते वेसे पावे ॥ **राणफल** ॥ ९ ॥ जे सजी रान फुरेतां ॥ माल नलाई पावे ॥ जे बबी रान फुरेतां ॥ किसे देखे ते सुसया ली देखे ॥ जे सजी रान न्यदर ते फुरेतां ॥ माल ते रतवा पावे ॥ जे बबी रान न्यदर ते फुरेतां ॥ नलाई पावे ॥ १० ॥ **जोफेफल** ॥ जे सजा जोफा फुरेतां ॥ दिल जार होये ॥ जे बवा जोफा फुरेतां ॥ इस मन नस दे नसन ॥ जे सजे जानु दासी र फुरेतां ॥ इस मन नाल जडाई होये ॥ पिठे ते नस नु बुरा कहाये ॥ जे बवा जानु फुरेतां ॥ इकत बेने ॥ ११ ॥ **पिनीफल** ॥ जे सजी पिनी फुरेतां ॥ ता कोई नस नु तेह मतलजे ॥ जे बबी पिनी फुरेतां ॥ इस मन नस देखे राव होवन ॥ १२ ॥ **गिटेफल** ॥ जे सजा गिटा फुरेतां ॥ सुसया ली देखे ॥ जे बवा गिटा फुरेतां ॥ किसे नाल जडा होये ॥ १३ ॥ **न्यूनीफल** ॥ जे सजा पैर दी न्यूनी फुरेतां ॥ किसे जगह वेव ते जागीर ॥ नस दी वर करार होये ॥ जे बवे पैर दी न्यूनी फुरेतां ॥ सुसया ली होये ॥ **पैरा की तली काफल** ॥ जे करस जे पैर दी तली फुरेतां ॥ बकुंत सुसा पावे ॥ जे बबी तली पैर दी फुरेतां ॥ किसे दिइ जतरा जा देखे ॥ जे दोने तली कां ॥ फुरनतां मुसा फुरी देखे ॥ ते दोलत पावे ॥ १४ ॥ **पिठफल** ॥ जे सजे पैर दी पिठ फुरेतां ॥ नस ते सनरा जी होवन ॥ जे बवे पैर दी पिठ फुरेतां ॥ ते माल हाथ लजे ॥ **पैर की नुजली याकाफल लिखते है** ॥

२

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	॥ वददशानानमय
रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	चक्रं ॥ अमावास्याकी
पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	घटीदणमैघटाइदीजे
म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	पुलैतिणमाहोदिनघ
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	टीजोमिजेपतेसू
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	र्यकीराशिदिषि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	जैअरराहकीरा
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	शिदिषिजैतेराऊ
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	कीअरसूर्यकी
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	राशिकैवावि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	काघटीकैतिण
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सुखेघटीअधिक
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	होइतोपनिवाकैदि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	नबंदोदयअरजेघा
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	टिकैबोबीजकैदिन
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	बंदोदयऊवेलिषि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	तेशिष्यवातसंदरेण
रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	

ईसानक्षत्राण	पूर्वदिशि	अग्निक्षत्राण
हाणिदिषालै अशुभ	कामचिंततोहोइतो कामकोनात्राकहे	अचित्तोसयदिषालै
उत्तरदिश		दक्षिणदिशि
अचिंतोकांल हऊवे	स्वानकानफमफ मावेतिणकोवितार	लातसंतोषउपजावे
वायवक्षत्राण	पश्चिमदिशि	नेत्रक्षत्राण
कलेअउवाट अशुभ	अशुभअरिष्टदे पाले	मनसंतोषउपजावे
निषितंपीथाआत्माये		

<p>१. शान्तक</p> <p>२. मित्रमिले</p> <p>३. वायु रोग उपज</p>	<p>मनोविहोद</p> <p>पूर्व</p> <p>२. लक्ष्मीलाभक</p> <p>३. अश्वत्थवातयुनावे</p> <p>४. मृत्पक देषाले</p>	<p>अश्वत्थ</p> <p>१. मित्रसमागम</p> <p>२. लक्ष्मीश्रीप</p> <p>३. चित्तोजय</p>	<p>इसानक</p> <p>१. जात</p> <p>२. सज्जनमिले</p> <p>३. प्राकृणाशवे</p> <p>४. वायुरोग</p>	<p>पूर्व</p> <p>१. मनवर्धित</p> <p>२. धनलाभ</p> <p>३. नवीवात</p> <p>४. मृत्क</p>	<p>अश्वत्थ</p> <p>१. अश्वत्थवातयु</p> <p>२. मित्रमिले</p> <p>३. लिपिमाता</p> <p>४. जोचोतजय</p>	<p>वायुमवालेतिपराविचार॥ इहोकावक</p> <p>सुणिजीजीयेमापावायापादेह तरेतिहोम</p> <p>नेलीयेसाततागधरेह॥ कवितव्येएकल</p> <p>तसुषबीजेऊकालधरिआवतीजेमिष्टआह</p> <p>रुद्रमवाधेकागवतावेपावोअगरायएमरागा</p> <p>येजारदिशोवाउगारायोआकआविष्णुमल</p>
<p>१. उत्तर</p> <p>२. लक्ष्मीलाभ</p> <p>३. जोज्जनला</p>	<p>लीकविचारचक्रं</p> <p>मायाउपरिपयपाता</p> <p>१. लकीमरणकह</p>	<p>१. लोचनदेखाले</p> <p>२. दक्षिण</p> <p>३. मित्रसमाग</p> <p>४. गतवजाल</p> <p>५. प्रव्यलाज</p>	<p>उत्तर</p> <p>१. मित्रश्रीतोष</p> <p>२. लोकरामिले</p> <p>३. प्रव्यलाज</p> <p>४. जोज्जनला</p>	<p>लीकमाया</p> <p>१. परिजला</p> <p>२. लोकरामिले</p> <p>३. कागबोलेतिप</p> <p>४. दिवारबे</p>	<p>दक्षिण</p> <p>१. लोचन</p> <p>२. मित्रमिले</p> <p>३. विपजगयइ</p> <p>४. प्रव्यलाज</p>	<p>विधरिआवइसमेमकागसुनावेवयाणबोल</p> <p>आपणचंदमइवायसवयाणफलाफलजाण</p> <p>अमरसाकरुआनंदमइ॥ इतिअथ॥</p> <p>श्लोकआत्मवायात्रिगुणीकृत्यात्रयोदश</p> <p>समन्वितांसप्तलिस्तहरेज्ञागीशेषकेनक</p> <p>वदेत्॥॥वर्षमभ्यजतीशुक्लदरानीरविव</p>
<p>१. वायवक</p> <p>२. लक्ष्मीलाभ</p> <p>३. जोज्जनला</p>	<p>१. गामवलावे</p> <p>२. मनवर्धितफले</p> <p>३. गामवलावे</p> <p>४. लोचनदिवाले</p> <p>५. पश्चिम</p>	<p>१. लोचनवाते</p> <p>२. मित्रधरितो</p> <p>३. नैरतक</p> <p>४. मित्रमिले</p> <p>५. लोचनदिवाले</p>	<p>वायवक</p> <p>१. सुषवात</p> <p>२. लोचन</p> <p>३. वेस्त्रलाज</p> <p>४. शान्तारोग</p>	<p>पश्चिमदिशि</p> <p>१. गामवलावे</p> <p>२. मनवर्धित</p> <p>३. गामंतरो</p> <p>४. लोचनआलीद</p>	<p>नैरित</p> <p>१. लोचन</p> <p>२. मित्रधरेजोज्जन</p> <p>३. मित्रमिले</p> <p>४. प्रव्यलाज</p>	<p>१. जोवेजितराधमिऊवे१२महीनारीजा</p> <p>२. जितराधेलाजऊवेअहमिलेब</p>

॥ इवरा वा लनवा मो विवा दिवस मे लन के दिवि वा लिखानो विचार ॥

इसा निकरि	शुर्वदि स	अमिरुग	इसा निरुग	शुर्वदि स	अमिरुग
इमपाति	राजलंग	देसनेम कहै	मास मध्ये वा रयेवे	लालदिवा	अमिरुग कहै
स्त्रीलास	राजदल लंग	जाराधी प्रवाल	अमिरुग कहै	रोग सय	इव पाठ कहै
राजुनी	देराउ पद	राजा सी कोना	राज मरण कहै	कविला	उनुवात
उत्राधि	गात्र पी मा	पुत्र कोषा धि	वापदनास	तुनिल	पुत्र कोष
वायु कुरा	पश्चिम	नेरित कुरा	उत्तर दि मिश्रा	उर्वदि स	दोहण दि श्रा
कार मान कहै	परव काग	दिन धम	देस वला स	मिहली	अलं तफल वा
चउपदलास	अमिरुग	येष्ट सय	स्त्रीहत्या कहै	रात्र वोके	स्त्रीममा गम कहै
कलह कहै	रात्र नाग	रोग कहै	अश्रु पाति कहै	तेह रोवि	सय व लि कहै
गात्र नाश	वलि जल	नित्र हामि	विठ म्या मिले	चोर ॥ ३ ॥	राग कष्ट कहै
उत्तर दि श्रा	उर्वदि वा	इरुणार	वाय कुरा	पश्चिम	नेरित कुरा
मोटी स्त्री नाश	शृंग सक	दिन दोयमे	चोर सय कहै	मर्प दष्ट	रोग कहै
चोर सय कहै	तेहने वाले	मर्प सय	इव पाठ कहै	चोर सय	अलं तलाल
लो जन पात	इति एगो	मरण सय	अश्रु सवात कहै	इव लाल	इव पाति कहै
सुख वाता	विचार	राज प्रमोद	गृह सून्यता	हर्ष निरल	राज प्रसाद कहै

गीक वि

~~गीक वि~~

दिवसत वारा तिसमान

ईशांनिकुति	पूर्वदिशि	अग्रित	इशांनिकुति	पूर्वदिशि	अग्रित
लास दिषावे	वेवितक	अग्र दिवा	मृतक दिवा	धनशायक	स्त्रीसमागम
शोवगयो अवे	लक्ष्मीला	मित्र शमा	अग्रितयक	स्त्रीसमागम	कलह दिषावे
उमित्रमिलावे	असुषवाता	लक्ष्मीला	मरुजाधसादपा	अग्रितय	सुषसंतोष
वायवगकरे	मृतकवा	अ वितल	खोलयक	कार्यनास	मित्रदुस्नि

उत्तरदिशि	उर्ध्वदिशि	पश्चिम	उत्तरदिशि	उर्ध्वदिशि	दक्षिणदिशि
मित्रसंतोष	गंकनो	गामयात्रा	वारलयक	गामलवालो	दि क ऊला अवे
गऊर मिले	विचार दि	मन वं वि	इव्यशायक	वसत वारा	सुषसंतोष
लक्ष्मीला	नग्नैरात्रि	गामवल	गामररा	तिह नोवि	इव्यशाय
सोजनलास	सरीषामा	लास दिषा	वारलय	वार लिषते	मररा सुरावे
	परिषय		वायवरा	पश्चिमदिशि	नेरतिक्कुरा

वायवकुरा	पश्चिमदिशि	नेरतिक्कुरा	विद्यालास	सुषसंतोष	सप्त वाव आगम
सुषसंतोष	गामयात्रक	लास दिषावे	कलह दिषा	परमररा	सुष अ वित्या अवे
लासवाता	मन वं वि	तक मित्र वर	स्त्रीसमागम	धनशायक	जयवाता
वसलास	गामवल	मित्रदुस्नि	विद्यालास	विजयवता	
वायवग	लास दिषावे	लास दिषा			

रेषा अंगुलीको जाइल गे संसृष्ट सोनरा जाउत मथाइ तिकारेषा तज्जिनिका कौं प्रा तिकौ संसृष्ट रित्यनी प्रा अरिषामध
 मद्वद्व सिक्करइ ९

॥ अंगुष्टस्यापि यद्येति इक्ष्मिपतिमुत्तमं यैवतज्जिनिकां प्राप्ता राजपं नामाज्यमुत्तमं १ येनाधिप
 मात्रा मद्वद्वत्तउचेनाको धणी दोइ रेषा अनामिका कौं प्रा मरु तिकौ नर धनवंत दोइ २ स्वधी दोइ सोनागी दोइ
 धनेश्वरं मध्यमागमनतथा अनामिका पुनश्चेष्ट धनवान् धनवेत्तरः २ स्वारिवंतं सुतगंवापि
 रेषा मद्वद्वक निष्टका कौं रेषा चिटी अंगुली कौं प्रा मद्वद्वत्तउस्वर्ण रूपनोला ३ कनिष्ठा की जितनी रेखा माणवंध
 मंप्राप्ता उक निष्टकां याकरोति यदानेव पयश्चिन्ता सुवर्णगा ३ कनिष्ठा मूल रेखाया माणिया
 तां ईदी मइ तितनी मीतेदनी क दिवी संसृष्ट रेषा जितनी दवइ तेतली ४ उर्ध्व रेखा जे दनइ दाय दोवे तीन रेखा
 वति रेखा काः त्पावंतो मदि लास्य म्त्रियस्तावंतिताः प्रिया ४ ऊर्ध्व विरेखा म्त्रक करे विरेखा
 अंगुल विषद्वेवं तेष्करुष मदानो गी मदास सामुद्रिक के वचन ५ सामुद्रिक विषद्वेवा कस्यो लक्षण ॥
 अंगुले तथा नाना नोग सुखा सानिः समुद्र वचनं यथा ५ इति सामुद्रिके करतल रेखा लक्षणं ॥
 जे दनइ गां बडि वारली दोवे अथ कुंज प्रकुंज सरीषी तेन राजा थाइ धनवंत थाइ धनको समुद्र जे दने
 गी वा उवा उलायस्य इक्ष्मि कुंज समान वेत् पाधिविः सत्र विज्ञेयो धनवान् धनमेकुलः ददीष्टी
 ग्रीवा दोवे मोर सरीषी उंट सरीषी ग्रीवा दोवे मूयटा सरीषी ग्रीवा दोवे सोमनुष्य देनागी थाइ धनहीन थाइ ७ गा वडि
 ग्रीवा शिखि ग्रीवा वक्र ग्रीवा धवा धनः शुक्र ग्रीवा वट्ट पाव ते सर्वे परिबद्धिताः ७ ग्रीवा लक्षणं ॥

जेहन उबांध उवधन समानेले वली कोलिना संनसारा तेमनुष्यराजा पृथ्वी पतिथाइ महानोगी थाइ मदाधन वंत ८ इति बांधालक्षण कसो

वृवस्कधनमोयन्य कदली संन एवच सर्वेति पार्थिवा क्रिया मदानोगामदाधनाः ८ स्कंधलक्षणं

जेहन इचं समाशरीषो मुहद्वदति कोनर मदाधना मृगला उंदर मराषो मुहद्वेइ तेनर मनुष्यनामपदी नथाइ ९ यद्योडा मराषो मुख छेवे तेनर

वंद बिंबोयमवक्र धर्मशालि मदानवैत् मृगधूकवक्राये तेनरा नामपवर्जिताः ९ दयवक्रा नरायेव १० स्व

॥ चिकी बावें ॥ गाबडि नाषे देह कंप २ निरोधकाली ३ यणुषा मवाजै ४ स्वादन जाणे ५ षष्ठ अनिष्टो ७ कोने बाहिर ८ स्वा

वेदकठे

॥ अथ वेदकठे ॥ ग्रीवा नम्र शरीर कंप अमरी कृष्णा बज्रका सता नास्ति स्यादबुद्धावतिदं श्रवणेनास्ति र

जीन बोटी नेत्र मोटांदि नष १२ दंत दोव काला १२ मीट घणी ऊइ १३ सासन नैन पूजइ १४ अरु बचावादे हाथ मुंह मेव

वौ जिहया नित्र अफार नरवानि दंत अधरा त्रपामा च मोहंतथा ॥ स्या सो नासिन इज नंत्य मबवा दूरतो मुखेवा

दइ १ नाकवारवर ३ कर्क आवै ४ अस्तरकी दंत ऊमेले बिदपौ २ काली जीन २९ अतिसार से ३ जोर ऊषा दिहकी जोहु आवोले

हन १ नासा सुं टन कर्क सारर जनी विट दंत की पावली ॥ कृष्णा जिह तिथार शोफ वमनं दिक्का मृघ सृष्ठा

देहताडो २८ टषा घणी २९ आफरोर पेट रूषे २९ लहरि दांत रु विकल रु एलक्षण जेहने ऊइ ते रोगीयो नजीवइ १ इति

का ॥ काया चीत टषा च ध्याते उदर मृषा ज्वरो ॥ दस्कटं वै कल्पं इदं चेष्टितं स पुरुषो सीधं स मृत्यु करो १ इति

श्रीरोगिरालक्षण ॥ वरयेइ विदलथी सूख मांस बावै तो वेह ज्वर बालाने मगरे रुवरज जिअतीया आप्या पुषे तो मेणु नवरजीए

रोगिणां शरीरिष्टावै ॥ वर्जयेदिदं शूलनी कृष्ण मांसं हारी घृतं गोधूमा नीअती सारे चक्षुरोगे च मेधुनं १ ॥ श्री

जसदप ४ अजमो १२९ इमा हलदप ५५ मा १२

^{नील} रक्तः श्वेतः पीतकः ^{चेतरक्त} पारलान्तः ^{ध. संसृते विवित्र} पांशुश्चित्रः ^{अतिरक्त} कृष्णवर्णः ^{पातश्चेतः} पितृश्रातः ^{गति} कबुरो ^{काव. ने, बुभुव} कबुरु
^{मली} वर्णा ^न मालिन्मोजा ^न दाशिवर्णः ^न क्रमण ॥ १॥ ^न विक्को ^न कुआके ^न चिक्कि ^न तो ^न शितो ^न कवि ^न ह
 पानो विदग्धावसितः शानिः स्यात् ॥ ६॥ ^न दम्पिपातः ॥

॥ अथ आषात्रीजप्रभातसमवायुवायते हनो विवारः पूर्वमोवायवायता
 रुमो सुगालवायक कणक्षनकोरी ६ लहे अगनिरुणि ७ सूर्यजगते वेलाये
 वायता घणने मोडुको लहुवावायती ८ पणि आवेक कणकोरी १० ५ घायदपिण
 दि ये वायता आगामवरषेडुकाल कलसी १ कोरी १२० लहे नैरतिवायवाये
 धरमीषामावरमोवर अघायक कणक्षनकलसी ५० ६० लहे कोरी पश्चि
 मता युष्ठी सुगाल कणकलसी २० २५ लहे उन्नरदिशि नो वायवाइतो सुगाल
 कणकलसी कोरी १४ लहे इयाने पिण सुगाल कणकोरी १० लहे कलसी
 दीवा इति आषात्रीजवायुविचारः ॥

॥ अंगविद्याप्रवक्ष्यामि ॥ नात्र देन स्वयं कृता ॥ अंगं न मात्रेण ॥ ज्ञायतेव शुभाशुभं
 रष्ट्रं मानं स्पृशेच्छीर्षं महानात्रं विनिदिशेत् ॥ १ ॥ हरिणं धनधान्यं च ॥ प्राप्नोति नात्र संस
 य ॥ सुषं वनालिकावदं ॥ तथा प्रवणमेव च ॥ यद्येतानि स्पृशन् दृष्टेत् ॥ प्रवृत्तान् प्रजा
 यते ३ ॥ ग्रीवास्संघं तथा ॥ स्पर्शानयदिव दृष्टेत् ॥ मध्यमस्तु न वेत्ति ॥ केशेन सह जाय
 ते ४ ॥ उदरं पृष्ठं नास्ति च ॥ स यः ॥ स्पर्शानयदिव दृष्टेत् ॥ अथ वा दोनवेत्त स्या ॥ वचनं धनमेव च ५ ॥ क
 र्त्तुं शक्यं प्रोक्तं ॥ स्पर्शानयदिव दृष्टेत् ॥ कन्यालान्तेन वेत्त स्या ॥ पुत्रलान्तेन मेव च ६ ॥
 नास्तु तथा तथा गुह्यं ॥ पादयोर्थादिव दृष्टेत् ॥ नागमन्तेन वेत्त स्या ॥ केशेन सह जायते ७ ॥ स्पर्
 शं नोयदाके शान् ॥ महादुःखं प्रजायते ॥ न तस्य जायते सिद्धिः ॥ न च कार्यं न विष्यति ८
 फलपुष्पतथादीपं ॥ गृहीत्वा यदि दृष्टेत् ॥ महालान्तेन जयश्चेत् ॥ तथा सर्वशुभं न वेत्त ९ ॥
 स्त्रकाष्टं तथा वीरं ॥ अंगारं स्त्रं च दृष्टेत् ॥ नयं वैवर्तवेत्त ॥ ग्रहदोषो प्रजायते १० ॥
 आरामेषु यदा प्राप्तेत् ॥ सुखं स्थाने तथैव च ॥ प्रसन्नकस्य न वेत्त स्या ॥ सिद्धिः सर्वनिर्भयः ॥ ११ ॥ हरिणं रा
 ज्यं नो ज्यं च ॥ अन्नं पातं तथैव च ॥ दृष्टेत् सर्वसंपत्तिः ॥ यत्किंच न न निश्चितं ॥ १२ ॥ ज्ञानलान्ते नदीतीरे
 रमणाने तीवमनोरथः ॥ उपविशाय दा प्रचेत् ॥ कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १३ ॥ स्मरणे शुभं दृष्टेत् ॥ मूला
 गारे च तुष्यथे ॥ एतेषु कार्ययः प्रचेत् ॥ कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दीनि तथा गंधान् ॥ गृहीत्वा यदि
 प्रचेत् ॥ न तत्र प्रसन्नकमान् ॥ कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १५ ॥ देवदृष्टे नदीतीरे ॥ स्थाने चैव मनोरमे ॥ उपविष्टो यदा
 प्रचेत् ॥ तदा सिद्धिः सदा भवति ॥ १६ ॥ स्मरणं च योगं साधनं च ॥ दृष्ट्वा विचारं समाधाय ॥

॥ बीकनो विचार निपाये छै दिख विदिस रूनी पाववी जाणवी हरव दिखबी कहोय तो लाभ होइ। अग निदिखबी कहोय तो
 हाण होइ। दक्षिण दिखबी कहोय तो मरण होय। नैरत कण बीक होय तो रोग मप जै पठि मदि सबी कहोय तो संपत्त होय वाव कण ठी
 कहोय तो सुत वारता सुणावै। उत्तर दिखबी कहोय तो धन लाभ होय। ईशान कण बीक होय तो वैरी नो वियोग थाइ किहं ईजात
 साहबी बीक होइ अथवा जीमणी होइ तो गम मान कीजै। गाम जाता नावी बीक होइ अथवा हर की होय तो चारु होय गम पैस
 तां साहबी जीमणी बीक होय तो अति वारु होय॥ ॥ इति श्री बिका विचार नियमः॥ ॥ स्वान गाम चालतां नावी नलो प्राप्त मां हि
 पैस तां जीमणी नलो प्रवृथी नावो होय तो आरोग्य अर्थ लाभ अथवा गाम चालतां स्वान देषी वली वैसी नही तो चोर धन लीजै
 मां हि पैस तां जीमणी सरवै तो मिष्टान्त जाजन मिलै स्वान गाम चालता जीमणी होय तो अथवा नावो होय तो अर्थ लाभ होय मां
 होय जीमणी होय तो अर्थ लाभ सै गाम चालतां मुह मांस लेइ मां आवतो देषी ये तो अर्थ देषी ये अर्थ लाभ निश्चै कहै गाम चालतां
 पासे पुक्खान खानणी सुरमा तो देषी ये गाम अथवा नगर अर्थ लाभ कहै पाबो मुह कर्तो स्वान कान फम फम वै तो गाम चालतां
 गाम चालतो अन्या देइ मुष माली आवै अथवा जानो देषी ये तो चीत व्यो फलै चालतां स्वानरी सै मुसै तो बंधन कहै चा
 स्वान पग पुरस सुय पुणै तो गाम तरे न जाइ चालतां स्वान विनोद करै गाम तरे नान होइ मैथुन कर तां देषी ये तो बंधन सिद्ध

स्नानलीलाप्रपरसुं आतौ जातां देवीयै न जायबो स्नानमाधो कानधग कर। पुजातौ हो इतौ न जाइयै कलहकपज चाल
ज्यै मुहको लै तो तथा लमतो उदेग कहै घरमाहे नही ताथी। सुधरती सुफरसै सुवै तो हा एथन कहै वालतां स्नानवे लुउपस
वै तो न हलाता ॥ ॥ इति स्नान विचारः नयनचंद्रजिदर्थी लिपीकृतः ॥

करेमि नैते कोअह आहार पोअह अचउदेअउअरीरअकास्यअउअवाचारकोअह अचउखनचेरपोअह
अचउचउविहपोअहेकाएमिजावहि वअएयअुवाअमिउविहतिविहेणमृणोणवाया एकाएणनकरमिअव
रवेमिअअनैतेपडिकमामिनिहामिगारिहामिअयाणकोअरामिइति कोअरुपचयाताविधि
आगर-वैलो कंमो-वैदविहअणोअुहअणोधनो जेसपोअहमहिआ अर्षदियाजेविअैतेवि१ कोअ
अुहाइ-नावेअुअुहाईषवेइनेथिअैहोअिहयनरयतिरियगरकोअोविहअपमतेण

॥ अथ अंग ज्ञान विंता कहे उंचो जे वै तो जीव विंता नीचो जे वै तो जीव विंता सम दृष्टिः वाम दृष्टाण जे वै तो धात्र विंता जो एक जीमणे जे वै तो पुरुष विंता एक नावा
दिसि जे वै तो मूत्र विंता जीमणे हाथे माथे फर सै तो वक्ष नाई विंता बांधो फर सै तो मित्र विंता मुखे फर सै तो धर्मा नी विंता निला डेलान विंता कपोले सजन विंता कर्ण
ऊग डौ विंता आंगुली फर सै तो बाल विंता पगे गामंतर विंता जंघे बांध विंता इति ॥ मेष लग्ने आग चतित म्याय तो चागे मिलति २ वृष लग्ने आग चतित म्याय
एतो वृष जे मिलति २ मिथुन लग्ने आग ते स्याय तो पुरुष मूत्री मिलति ३ कर्क लग्ने आग ते सति ४ एतो मूत्री धनि हस्ते मिलति ५ सिंह लग्ने आग ते स्याय तो वि
लागे मिलति ५ कन्या लग्ने मूत्री मिलति ६ अश्व दृष्टाण राहं उलूको करोति ७ उल लग्ने म्याने मिलति ७ धनवा अंग दीनो पुरुषो मिलति ७ दृष्टि कल मे कपि
ल पुरुषो मिलति ८ धन लग्ने पुरुष सुंदरो मिलति ९ मकर लग्ने विधवा मूत्री नीच दासी वाम मिलति १० कुंभ लग्ने मूत्री मिलति मृत्तिका हस्ते मृत्तिका पात्र कृतः ११
मीन लग्ने पुरुष युग्मयो मिलति १२ इति द्वादश लग्न विचारः २ विमूर्च्छा जे लग्ने लग्ना षष्ठः शनीश्वरः दशम म्यो नवे दंडो गमने शुभ संपत् १ नौ मेष एतुणे
सप्त बुध रत्नारि लग्नाः मूत्रो शुक्र मूत्रि निमंदो आत्राग उर्मद फलं २ बुध लग्ने द्वितीय म्ये मूत्रे मूत्रे दिवसमा तत्कालं गमनं देवां मदानला जोरि शुभयः
३ लग्ने गुरुः शनी वः शो लग्ने च नृपुत्र सप्तमाः यात्रा काले नवे दृष्ट्य तस्य लान पदे ४ गामांतर विचारः षष्ठाष्टमे शुभ रथे स्यात् पंथी न गृह मागतः दृष्टी
शुतो बुध शनिः पंथी तत्र नति इति १ शुक्र राहु वन वमो सप्तम म्यो नवे दृष्टी तदा कुशल ह्ये मेण दिनानि त्रय पांथतः २ आगम पृष्ठा ज्ञानं ॥ राशी नाम लिखी
तसिंहं बुध नव वामि रवं शीत नं कन्या कर्कट न करानि सदनं याप्यां शुभं मंदिरं राशौ गोश्रुत लाथ युग्म सदनं राक्ष प्रतीच्यां मुखं शुभा कुंभ नृपा जरा शिजा
जनां मोक्षाननं स दृष्टं १ इति ॥ सवत मां देही न करि इक सो अरु पयैत्री मारुप शेष अंक राका तण जाणे विश्वा वीस १ सहस्र बती स अरु चार लष कलि
युग एह प्रमाण ४३२००० व्या रती न ५५ गुण युक्त त्रेता द्वापर जाण २ राका मां दे जो मीये तीन नद अमृत एक ३ ७ ९ उगण्या मी ऊपरि अधिक कुवे
गत कल शु विवेक ४ इति गतिकलि चैत्री मा वसि वार नृप मंत्री मेष वार मिथुन रवि सोर धणी कर्क म्या धि पसार ५ आमा ठै रोहिलि रिषे जला
धि पति जो वार काती मां दे मूल दिन कोट बाल सो वार ५ इति राजा मंत्री ज्ञानं ॥ राका मे ५५ मेलिक रि वारे नागे दे ५ शेष र हे सो वै नथी वर्षा नाम कह
५ ७ इति वर्षा ज्ञानं ॥ तीन जो मित्रा क काल मे बिजं नागे रहे जे ५ शेष र हे सो वै नथी वर्षा नाम कह ५ ७ इति वर्षा नाम आवर्त सावर्त र शुक्र
रह ३ जोण ४ नाम गिलि मे ६ इति मेह नाम ॥ मेष र विसंक्रम म्ये जे दिन रुषा हि होइ ते धरि सर्व म सुद्र मे गिलि रोहिलि जगि मो ५ ९ ५ ५ ५ ५ ५
षम सुद्र मे इक तट ने इक अधि इक पर्वत इक संधितट रोहिलि मनि बंध १० इति रोहिली विचार माली धरे सुद्र मे तट धोबी के धाम संधो वा
ओ बालि क धर गिरि कुंभार सुवाम ११ इति अमा गो वा सो र विदस १० विश्वा वीस २० सनि जो म अठ ८ बुध वार १२ सोल ह गुरु १५ अछार १८ च
गु यात्र रत्न निहार १२ कर्कर विजिण वार मे ताथे स मा विचार ॥ राक अंक त्रिगुण उकरी सा तां दे ई नाग वधत ५ गुण पण म श्रि विव

रषाएहलाज १५ लब्धअंकत्रिगुणकरी साता नागवदेइ वधतडुगुणपणमजिपुन विश्वाधानलदेइ १५ लब्धलब्धत्रिगुणकरी शर्वरीतिप्र
माण दणतीततेजनेवायुदृष्टि कयविग्रहसवजाणि १७ इतिवर्षाद्यानयनविधिः राशिअधिपसंवतअधिप अंकमेतित्रिगुणाइ पंचलेलिना
गपनर कुवधलाजपजणाइ १६ लब्धअंकत्रिगुणकरी जेलिपंचतिथिनाग जोपरदेसापस्वगिति दशाअधोत्ररमाग १७ जापटदवापनरद
१५ मांअठगलासतर१७ बखशादस१० हाउगणीसाण रावीर१२ शुाइकवीअश रविश्राशि२ कुजत्रबुधधमंदपयुरुइराऊअकडशुजगीअ २० इ
तिलानवरवाअथपवांगानयनातिथिआरदइकवारमे धम्याअवारदधालि तीनकष्यतेरदध्या योगइदोइपेताल २ गतसंवत्सरवेत्रवदि
वारसिवारनक्षत्र कुवकजोड गतपत्रमे करकोनवउतिथिपत्र ३२ चारसअदेव्यारतिथि तिणशीकुवइतिथिआर वैत्रशुकलपनिवायकी
वउथिजगेसुदिवार २७ पडिवाशीपांचतिथिआर वै बीजथकीवहिदोइ इणपरिकारदमामलगि पइदापतनोदोइ २४ अथपवांगानयन
दिनीअधकारः तिथ्यादिकइणाकरी करपाबलितिथिदीन अगलीतिथिवागदिमाव थायेसुहनवीन २५ पुनः इतीयआकारः तिथिमेदोइ
घडाईये एकदीनकरिवार नक्षत्रसोइइजोगमइ जोडोकुवकविचार २६ इणिपारअजोवीसमी थावेतिथिवागदि सुधपतडोकरिसंगुदीक
रउमुयुरुसुप्रसाद २७ इतिपवांगानयनविधिः घडीपनरइकत्रीसपल तिथिइणारइकवार शुक्तिकरोगतिअंकमेनवसंकलविचार २६ इतिसं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२		मास	क्रांतिआणलरीविधिते			
३३	३१	२२	२२	३०	३२	३४	२६	३६	३२	३६	३५	१०	दिन	तिथि ११			
३०	३०	२६	३०	३०	३३	३५	३३	३६	३६	३३	३५	२०	दिन				
३१	२२	२६	३०	३१	३३	३५	३६	३६	३६	३३	३४	३०	दिन	वार १			
२०	२०	२०	२०	२०	१६	१६	१६	१६	२०	१६	२०	१०	दिन	५ घडी १५			
२०	२०	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	२०	२०	२०	२०	दिन	पतन ३१			
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	२०	२०	२०	२२	३०	दिन	उदर ३०			
२१	२३	३३	२०	२१	१६	१७	१५	१६	१३	१६	१५	१०	दिन				
२१	२२	२२	२२	२०	१६	१५	१६	१६	१६	१५	१५	२०	दिन				
२१	२३	२२	२१	२०	१६	१५	१५	१५	१५	१५	२०	३०	दिन				
अ	म	र	उ	ह	वि	सि	वि	अ	य	र	उ	अ	व	श	र	उ	र
३०	१५	३०	४५	३०	१५	४५	३०	१५	३०	४५	३०	३०	३०	१५	३०	४५	३०

कुवांक
तिथि ४
वार १
घटी १५
नक्षत्र ३
घटी १२
योग २
घटी ४५

॥ ५ ॥ अथ गिरलोई विचारः ॥ गिरलोली मा घडपन इतनु धन वंतन इधनननु कय क
 दइ दलिजनिनइ मा घडपन इतनु धनननु लासकदइ। कष्टपनी दान इमा घडप
 नइ तनु कष्टतनइ। कनु प्रविषम इतनु बुरी। पेटक परिषम इतनु मीता सोडन
 कदइ। गालन क परिषम इतनु स्त्री ननु लासकदइ। डीमणइ अंगपन इतनु मि
 तननु लासकदइ। दाघनु परिषम इतनु जवो ननु लासकदइ। डीमणइ घट
 इतनु परिषम इतनु सोम लासकदइ। नावी जांघक परिषम इतनु कन्या लासक
 । डीमणी जांघक परिषम इते मा मे तरुन कदइ। पीनी कृती नीची कतर इत
 न अमु सवात करणावइ। नंदि मा विसुता पनइ तनु मनो वाचितनी सुक
 दइ। इति गिरलोली विचारः ॥ काकी मनु मा घडपन इतनु वमास मादि म
 रण कदइ अतिरइ अगिपन इ अषवा अमनु फरसकरइ तनु यं मुरीगे क
 दइ ॥ इति काकी मविचारः ॥ अथ ॥ पूर्वदिशि सिरहा एतु करि न्दु सुयइत
 न अण कपक वधइ। वदिगादि से सिरहा एतु करि सुयन तनु सुख संप
 दा कदइ अथि मइ घणा विजप कइ। नुवरइष्ट सुमरण दानि करइ ॥ इति

मृगविचारः॥ पूर्वदिशिबीकहवइतनमरणाकहइ॥ आगिनेयकृण्ड
 बीककृण्डतंगसोकरइप्रदक्षिणादिसिनीबंककृण्डधननननसक
 हइ॥ अनिरतिक्काइतीकहोइतनसुषोवइध॥ पश्चिमबीकधनना
 समरणासयकहइ॥ वायव्यकृण्डधनसंयदानननलासकहकहइ॥
 उत्तरदिशिनीबीककहइ॥ इमानेकराइननीबीकसुषलासकहइ॥
 आपणाबीकचलतांनइमरणाकहइ॥ ए॥ पूर्वनीबीकविणासकहइ॥ १०॥
 आकासनीबीकसर्वसंहारकरइ॥ ११॥ पातालनीबीकरागजणावइ॥ १२॥ इ
 तिबीकविचारनिश्चितं॥ ए॥ नाथाकेना॥

लमासीतोषुपुजैः जो न करी टीसी
 में ई ॥ लवण फुर के तो लक्ष्मी लासः रस गोरस
 कान फुर के तो सूनी वातः दिसो दिस सं लविज
 गाल फुर कई तो स्त्री लो गविजासः जो अंगु गो न
 रलो फुर के तो वेठि कुपुजैः जो नीच लो फुर के तो अ
 सत्री लो गल हइः हिम की यणि लो गलासः गाल फुर
 के तो आनर ल हैः हिम की न पर रुमी पिण नीचे
 फुर की ल ली नही गाब नि फुर के तो लयः बांधो फु
 र के तो कल ह कुपुज ॥ बलो फुर कई तो वैसी मरइः
 लास लो गज सयामैः काष फुर के तो धन हानि करइः पस
 वामा फुर के तो बाही वात सुणावैः पूवि फुर के तो वैरी
 मरें बाह फुर कई सइ ल मिलइ कुहली फुर के तो जय पां
 मइः हाध फुर के तो कस टट लैः हवाली फुर के तो संपदा
 पां मैः पुण चै फुर के मी तया मइः अघ वा प्रीत वधैः अंगु ली
 फुर के तो प्रीत पां मैः हीयो फुर के बइरी जीयइः गलो फुर के
 तो लास विगनानः घण फुर के स्त्री लासः पेट फुर के तो सं
 ताण वधइः नासि फुर के तो चालिः आसण फुर के तो स्त्री
 सं ॥ ताण पां मैः डी चण फुर के तो हरष पां मै ॥ इंद्री फुर के
 तो असत्री लासः कनि फुर के तो नवा वसर यामैः साध ल
 फुर के तो बंधण पां मैः हवी यार सय करइः गोमो फुर के
 तो बाहण यामइः धीमी फुर के तो परदे सच लावैः गिरि ए
 फुर के सं पदा वधइः पगनु फुर के तो धन डुवैः पगत ली
 फुर के तो सविसेष धन यामइः पगनी अंगु ली फुर के तो
 बाहो मण मिलैः लखी अस सय करइः हि वै पुरुष रा
 अंग जिमणः फुर कई तो विचारः असत्री नइ मावउ फु
 र के तो विचार जाणि बोः जो असत्री सह वडु वै तो उर ल

फलैः विहवनेमभ्रमफलदृशः। जिकोविचारकहोति
 कोदीहरोः। अउहीजोउपरागेफलरात्रिरोजाणिबोः॥
 इतिश्रीअंगकुरकणविचारजाणिबोः॥

सातकुलचैबेलीनांधोलांः मंत्रगणीनें सतवारकुलें
 मंत्रगणीनें अगनीमां हें होमवुंः। माचोयगमाचोहाध
 लनें हंघाजीनें मसां एनी राषलेवीः बेयैवसतलेगी
 करवीः आदीवारः सधामंगलवाचयमेंलेइसात
 वगणीइं॥ कामरूंदेसकोमनसानारीः त्यासेअ
 समाजजोगीः आसमाजजोगीरें वावीबेवामीः॥
 घामीसुकेवसुकेः तेकुलकीयांषमीवसेनार
 संगंबीरः यरनरकीनारीमेरेयानुनढालेः
 नुगतोसुरजढालेः हमारीहकारीयाबीकरेः
 बायकामखादेवीकीसकतकरेः॥६
 अथोमनयोः जायफः नागकेसरवाजी२॥

लुबीनश्याणीनृधमुधुपीपाणीपाइइं। मीरीश्वजपुरासाणी
 सीधवषवरावीइंः पेढदूषतुंरहिंसहिः। अथवागाइंनंम

लवंगटांक१	सुंविदेवदारु। वज।	सारिंगकरा
टंकणवारटां१	एहनुंचूरुऊहा।	समस्तस्वासनें
अफीणटां१	पांणीसुंकणवीइंस	वइं।
गोलीवाला१	मस्तस्वासनावइं	सुं

॥ श्री ॥

अथ अंग फरक नीतिषतेः ॥ पहिली प्रथम मस्तक फरकै तो न जो वर
रपावै १ विरह मं फरकै तो राज प्रसाद पावै कपाल फरकै तो दरबान
जान होवै २ दोय आंख फरकै तो रुख मो जाग पावै ३ न
फरकै तो मित्र मिलवै ४ दोउ आंख फरकै तो अस्त्र समागम होवै ५ कान
फरकै तो न जीवात सुनावै ६ नासिका फरकै तो सुगंध की प्राप्ता करै ७ गाल
फरकै तो असतरी समागम होवै ८ उपर को होठ फरकै तो असतरी बुझ
करै ९ नीचै को होठ फरकै तो कलेस करै १० मुख आरजी न फरकै तो मिष्ट
न नो जन पावै ११ पित्त फरकै तो न जो वसत रहै १२ ऊष्ण फरकै तो मरन क
लेस देवै १३ दोइ धंधी फरकै तो मजन मिलै १४ बांह फरकै तो नाइ हित सुने
रहवै १५ हाथ हथेरी फरकै तो सुदर बदेवै १६ हिरण्य फरकै तो ब्रह्म न गतिक
१७ उदर फरकै तो दवा नो जन विडै १८ रंजि फरकै तो असतरी सुनो गरी
पाप करै १९ दोइ जंघ फरकै तो अस्त्र अरघो डी प्रसीध पावै २० बिही फरकै
तो न सुख करावै २१ पाव फरकै तो वर व फरकै तो वंश पार गव जावै २२ इती
कनकी धी छान पुली

जीमणउ २४

इतउ राजपमान कइइ निलाउ फरकइतउ नान हर्दिना क
इतउ फरकइतउ प्रीय संगम कइइ बिऊ आंखि विचाल इतउ फरकइतउ
नासना करी मांही फरकइतउ संतोष ऊप जइना करी दिग मी फरकइत
तउ जस लाल लवणा फरकइतउ धन लाल कइइ कान फरकइतउ ही बात संज लावइ तावउ कान फ
रकइतउ आश्चर्य कारणी बात संज लावइ अंध मूख कइइ होइ जीमणउ गाल फरकइतउ श्री
लाता तावउ गाल फरकइतउ श्री ना पद दिसा अश्री मिलइ अथवा श्री पदा दिष्ट नोन
प्राप्ति ऊपरिल उदो व फरकइतउ विजय होविलउ होठ फरकइतउ प्रीय संगम कइइ अथ
तो नन कइइ हिरकी फरकइतउ नो गती प्राप्ति हिरकी फरकइतउ मध्यम फल अथवा क
गइ एक नउ ते नउ आवइ गल व फरकइतउ आलरण प्राप्ति ऊइ जीमणउ वर फरकइतउ
नो ग प्राप्ति तावउ वर व फरकइतउ लाल कंध फरकइतउ कल हा काष फरकइतउ
इव्य ला निप सवा म फरकइतउ वधे रनी बात संज लावइ अथि फरकइतउ वयरी मरइ
जीमणी बाऊ फरकइतउ प्रिय मेला पक होइ मावी बांइ फरकइतउ श्री पदा दची
इतउ कइवुं कइयां लियइ जीमणउ हाथ फरकइतउ जय तावउ हाथ फरकइतउ
रोगा मयति कइइ रुघाली फरकइतउ धन लाल प्रउ रुचउ फरकइतउ अनी ध्वी त
इ आंखुली फरकइतउ अंग कइती मित्र बंधु आपणउ अथ आरइ तावउ वउ उ
वउ फरकइतउ का एक मूखि वरिवां वइ मावी रुघाली फरकइतउ वइ शो वा वधिकरइ
मावा हाथरी आंखुली फरकइतउ वयरी हरिष की वाही वा वधिकरइ वद फरकइतउ वयरी
जय ही मउ फरकइतउ निधन फरकइतउ वउ तला पावइ फरकइतउ नार हर्दिना लि
फरकइतउ नान न शंख फरकइतउ श्री लाता कइइ फरकइतउ कइला प्राप्ति मय देवा फर
कइतउ मुत प्राप्ति मावल फरकइतउ वंधन अथ श्री कल हा गोहा फरकइतउ वाहण लाता जांघ फरक

Handwritten text in a South Asian script, likely Grantha or Tamil, covering approximately 15 lines. The script is highly stylized and difficult to decipher due to fading and the age of the manuscript. The text appears to be a continuous passage, possibly a religious or philosophical treatise.

बनरनार वस्त्रान्नरलनहे तिणवार गावद्रफरुके नयमरलथाय हाषवीयोफलनशास्त्रमाह ११ कंक्षेकल
 हफरकैतेऊवै ला ननोगजसुफरकेषवै काषफरुकीऊवैधनहांणि वातकहीएहवीपुरांण १२ पसवा
 माफरकेजसुसोमे वस्त्रनवातसुणावेतिमेः पुत्रफरुकेवैरीमरैः कारजसवैघरवेतांहीसर १३ बांहफ
 रुके प्रियनोमेलः ऊहणीफुरकी जयपदहेलेः करफुरके ठाले आपदाः फूलीहथाजीरायेसंपदाः १४ पुण
 वैफुरकेनवितारैमित्र अथवाकिंपिवधारैधीतः आंगुलीयांपुणएहविवारः धारोअरथएहनिरक्षरः १५ हि
 येफरुकेला नप्रमाणः थणफुरकेसविसेषतजाणः पाटफुरकेवधेनंनारः नानफुरकीपायविहारः १६ गु
 जफरकीरमणीरंगः पामेनिश्चैउत्तमसंगः कठफुरकीपहरीजेवस्त्रः सायलफुरकीबंधणसस्त्रः १७ गोम
 फुरकेबांहणवटैः जंघाफुरकीपंथेपमैः गिरयेफुरकेसंपदवधे अथकाईअविंतितामिलैः १८ पगऊप
 रफुरकेधनहोयः पगतलिएसविशेषउजोईः पगनीआंगुलीयाजिसैफुरैः तबअनीछघरआवेतिसैः १९
 उरषअंगलीजेजीप्रणैः बांमअंगफलनारीगिलोः उरतफलसूहवसुजागः मशिमफलआयोविह्वने २०
 ठवमनबोफलबोल्कोकेमेः बलविपरीतकह्योनिअममे दृष्ट्यवारनेबालऊमारः राजप्रभुषफलनापति
 *नेदर आरः २१ अंवतनुवनरअवंदः अदमशहेदिनहेमानः कहीवाततनफुरकणतणीः आगवांणजिआंगुणन
 णीः २२ इतिश्रीआंषफुरकणरोविवारसंपूर्ण॥

सुकनविवा ॥ पहरी उठी कन्यका माझी आयमिलंत निषमी माथे आव्ही पावी कोण करंत २२ वा जो अषरो वाजतो सोमो ७
 यमिलंति सुकन विवारो पंथीया तिण घर दोल घूरंति ३ मी गो फलसोमो आवतो वोंही जीज सोई अकन विवा
 रो पंथिया दिन दोलत होय २४ पुफ गुंथी अ नमालका साझी जो आवंत अकन विवारो पंथीया सो नर राज करंत
 २५ निरक्षु मकै पावक साझी कवही जो आवंत अकन विवारो पंथीया तेज पूंज दीपंति २६ वृष न जंही आं
 मुही कवही माझी होय अकन विवारो पंथीया राज करे श्री सो २७ मिंघा अण अत सो नतो आं सो जो आ
 वंत सुकन विवारो पंथीया पग २ जीज कै रंति २८ सुहर मंमत हाथीयो आमो जो मिलंत सुकन विवारो पं
 थिया दिन २ अत दीपंति २९ इति श्री सुकन विवार मंथुं ॥ ॥ अथ आष फुर कन विवार लिखते श्री हरष
 फुर पय वंद जो फ कर अऊ बो पई वंद नर नारी ना अंग पंग फर कै ता स फ ला प त वंग २ माथे फुर कै पुह वीराज
 पंगी अवि वल सारै काज नाल फुर कै पुह सा जण रुह दिन २ थाये हिंद अमृद २ नां पिण फुर की सुष संप जै थां
 नक बैठा पाये विजै नाक आष विवि फुर कै जेह प्रीय अंग म अष म ह २ वे अव न नेह ३ विजं आषा विवि फु
 र कै जाम मित्र मिले अण विं सो तां म मय लोक हं हि ब ए जू जू उ वेदोग मनो जे इ हू उ ४ जिम लि आषा उपर
 फिरे तो जम जा न अष अनु अरे हां न अने नय नी व ले फुर की आये कं ल ह म हि य ले ५ सुष नोग अंग मं
 वियो ॥ नी व जी फुर की फ ल ना वीये अं ल हरी रुं य न य ड ष थाय इ ले ने व क ह्या विग ताई ६ नाक तणी मां
 मी ज व फुरे आत मं तो पी सुष करे टिका श्री फुरे ज व ना म का दीये न व ज अ नी आ म का ७ ल व ला फुर कै ल
 ष मी ला व पा मे रु ध द ही घी छा व का न फुर कै सु व च न मुणे रु मी वा त ही सो दि म न ले ८ गाल फुर कै म ह ला
 नोग अथ नो जन मा अर जोग हो व फ रु कै ज व ऊ प रे त व अ चित क लिय ल न र करै ९ सुष मि हान फ
 रु कै ल हे स्त्री स ग म अधै ग ह ग हे नोग ज ही जै हि म की फुरे हो व फ रु कै बो ली बुरा १० ग लो फ रु कै ज

॥ अथ सुकनारं जीमिनि षोडशं राजाचारं जीमणे नो देवकलजाय सुकनविचारोपंथीया पग २ नावज
 हाय १ मोरह कूके जीमणे नावीडरगा देव सुकनविचारोपंथीया अंतरमारे मेघ २ ऊं करे वो
 लेवार विचार आचमने मांछ दोस हे पा मेरा जडुवार ३ ना ला नी मुम मनीये जो दाहि दिप्रसाय सुकनविचारो
 रोपंथीया ४ अफ ल्या कफ माय ध नील विंय नीले माय हाहल ध्व धी मंत सुकनविचारोपंथीया आया
 मरु पूजेत ५ १५ मांछो विमहर जीमणे नावा ला नी जंति सुकनविचारोपंथीया अफ ल्या कफ मांछ ६ द
 ही अषं मित आथली को की नारी हाथ सुकनविचारोपंथीया संपत आवे आथ ७ ऊं न करे वो की सी ८
 लवंत ने हरण ह एता जीने जीमणा बीजा मरु नाया ह ९ मांछ आर मरु उरी १० ओर माव मं स्या न सुकनवि
 चारोपंथीया पग पग पुम वनिधन ए म्या ल म न ह का नी विधी या इ मरु जाते म एवा वे नावा जीम न ला दी ये
 ५ दिंत्यो पेम १० अंग धूणं हो मं ह ले जे नरग मन करंत ते धन धान बिहूण फा पर दे म नंति ११ नर व पर नी व
 ती न मे जागण जीमणी जाय इण सुकने उं पंथीया संपत वरु थिरथा १२ गाहा बा मो इ वरो बा मो इ वा इ मो
 तह देव न लुकी वा वीय धू धू नीय पुने न विना न ल मंति १३ वा इ म जीमणे ऊतरे ऊ वे सा व मं स्या न सुक
 न विचारोपंथीया राजा ये स न मान १४ हाथे मांछो मा मुह जी मुनि वर मा लंत सुकनविचारोपंथीया संपत
 मरु पा मंति १५ बां न ए तिल क की ये म हा सां मो आ इ मितं त मुष क ल्या ल कह तो म हा आ म्या मरु १६
 जंति १६ नाई सा मो आव तो हर प न ले ई हाथ सुकनविचारोपंथीया संपत आवे आथ १७ की वी क्षो या क प मा
 सां मो जो मितं ते सुकनविचारोपंथीया पग २ नील करंत १८ बनी जो हि स जीमणे जे जे वंती नाई शु क
 न विचारोपंथीया संक ट म ऊ ट ल जाय ए जल नरीयो अर बे ह मो सां मी स ह व नार सुकनविचारोपंथी
 या पा मेरा जडुवार २० गो स र वी आव ती क व ऊं सा मी होय सुकनविचारोपंथीया लिष मी ला मो सोई २१

